प्रातः क्लास 13-6-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। शिव भगवानुवाचः। और कोई का नाम नहीं लिया। अपना नाम भी नहीं लिया। पतित पावन वह बाप ही है। तो जरूर वह आवेंगे यहां पतितों को पावन बनाने लिए। पावन होने की युक्ति भी यहां बतलाते हैं। शिव भगवानुवाच है न कि कृष्ण भगवानुवाचः। यह तो जरूर समझना चाहिए जब कि बैज पड़ा हुआ है। यह बैज कोई कम नहीं है। ईश्वरीय बात है। तुम सभी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार आस्तिक हो। नम्बरवार तो जरूर कहेंगे। कई हैं जो रचयिता और रचना के ज्ञान को नहीं समझा सकते हैं तो सतोप्रधान बुधि थोड़े ही कहेंगे। सतोप्रधान बुधि, फिर रजो बुधि, तमोबुधि भी है। जैसा जो समझते हैं वैसा टाईटल मिलता है। यह सतोप्रधान बुधि है, यह रजो बुधि है। परन्तु नहीं कहते हैं नहीं तो फ्रेंक न हो जाये। नम्बरवार तो होते ही हैं। फर्स्ट क्लास की किमत भी बहुत अच्छी होती है। अभी तुमको सच्चा सच्चा सदगुरु मिला है। अंधेला नहीं। गाया भी है नहीं गुरु बिना जिनके अंधेले चेले सत्यानाश। सभी सत्यानाश हो जाती हैं। क्योंकि सभी हैं भक्ति मार्ग के गुरु। गाते हैं परन्तु उनका अर्थ नहीं समझते हैं। बाप तुम बच्चों को अर्थ समझाते हैं। गुरु जिसकी अंधेला ....द्वापर से लेकर तुम गुरु करना सीखे हो। परन्तु वह रचयिता और रचना के ज्ञान को जानते ही नहीं। इसलिए उनको अंधेला कहा जाता है। गुरु ही अंधेले तो चेले का क्या हाल होगा। तुम चेले हो ना। गुरु बहुत किये हैं। भक्ति है ही आधाकल्प मार्ग। अभी तुम बच्चे जानते हो जब कि सतगुरु मिला है तो तुमको एकदम सच्चा सच्चा बना देते हैं। सच्चे हैं दैवी देवतायें। जो फिर द्वापरमार्ग में ही झूठे बन जाते हैं। गुरु भी झूठ तो शास्त्र आदि सभी झूठे। झूठी माया झूठी काया... सतयुग में सिर्फ तुम दैवी-देवतायें ही रहते हो। और कोई होते ही नहीं। कोई2 तो ऐसे अंधेले हैं जो कहते हैं कि यह कैसे हो सकता। ज्ञान नहीं है ना। अभी तुम बच्चे जानते हो अभी हम नास्तिक से आस्तिक बन रहे हैं। रचयिता के और रचना के नालेज को तुम एक्युरेट जानते हो। नाम नाम रूप से न्यारी चीज़ तो फिर देखने में भी नहीं आती। आकाश पोलार है। तो भी फील किया जाता है ना आकाश है। यह भी ज्ञान है ना। बच्चे अच्छी रीत समझते हैं। सारा मदार बुधि पर है। रचयिता और रचना का ज्ञान एक बाप ही देते हैं। रचयिता का नालेज तो जरूर उनका भी बाप होगा जो देगा। बाप तुम बच्चों को इतना ऊंच बनाते हैं जो तुम रचयिता और रचना के आदि मध्य-अन्त का ज्ञान देते हो। यह भी लिखना है कि यहां रचयिता और रचना का ज्ञान मिल सकता है। ऐसे बहुत सालोगन्स हैं। दिन प्रति दिन नये सालोगन्स नये पायन्ट्स निकलते रहेंगे। आस्तिक बनने लिए रचयिता और रचना का ज्ञान जरूर चाहिए। फिर नास्तिकपना छूटजाता। तुम आस्तिक बन विश्व का मालिक बन जाते हो। यहां तुम आस्तिक हो। रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को जानते हो। परन्तु नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। जानना तो मनुष्यों को ही है। जनावर तो नहीं जानेंगे। मनुष्य ही बहुत ऊंच और बहुत नीच बनते हैं। इस समय कोई भी मनुष्य न रचयिता और रचना के नालेज को नहीं जानते हैं। बुधि पर एकदम गाडरेज का ताला लगा हुआ है। तुम जानते हो हो यह भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। अभी तुम रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त को अच्छी रीत समझ हो। सामने टीचर बैठा हुआ है। यह बाप भी है टीचर भी है सदगुरु भी है। तुमको तो अभी सच्चा सदगुरु मिला है। तुम जानते हो बाप के पास हम विश्व का मालिक बनने आये हैं। तुम 100% पवित्रता में रहते हो। पवित्रता भी है शान्ति भी है सुख भी है। आशीर्वाद देते हैं ना। परन्तु यह अक्षर है भक्ति मार्ग के। यह ल0 ना0 तो तुम पढ़ाई से बनते हो। सबको पढ़ाना है। स्कूल में कुमारियां जाती हैं पढ़ने लिए। जहां सिर्फ कुमारियां होती हैं। इकट्ठे होने से खराब भी हो पड़ते हैं। क्योंकि क्रिमनल आई है ना। क्रिमनल आई होने कारण पर्दा लगाते हैं। वहां तो क्रिमनलआई होती ही नहीं। तो पर्दा लगाने की भी दरकार नहीं। इन ल0ना0 को पर्दा लगाना पड़ता है। वहां तो कब ऐसे गन्दे ख्यालात भी नहीं आते। वहां तो है रावण राज्य। यह आंखें बड़ी खराब है। बाप आकर ज्ञान की चक्षु देते हैं। आत्मा ही सब कुछ सुनती है बोलती है। सब कुछ करती है आ

तुम्हारी आत्मा अभी सुधर रही है। आत्मायें बिगड़कर पापात्मा बन गई थी। पापात्मा उनको कहा जाता है क्रिमनल दृष्टि होती है। वह क्रिमनल आई थी तो सिवाय बाप के और कोई सुधार न सके। ज्ञान से सिविल चक्षु एक बाप ही देते हैं। यह ज्ञान भी तुम जानते हो। शास्त्रों में यह ज्ञान थोड़े ही रखा है। बाप कहते यह वेद-शास्त्र उपनिषद आद सभी भक्ति मार्ग के शास्त्र हैं। जप-तप तीर्थ आद करने से मुक्ति कोई नहीं है। यह भक्ति है। जो आधा कल्प चलती है। मनुष्य नीचे उतरते2 एकदम गिर जाते हैं। परन्तु यह समझ न कि हम भक्ति करते2 नीचे उतरते आये हैं। अपना बड़ा अहंकार है। हम भक्त हैं, माला जपते हैं, बाहर से है अन्दर ठगत। अब तुम बच्चों को सभी को यह संदेशा देना है आओ तो मैं तुमको रचयिता और रचना के आ मध्य अन्त का ज्ञान सुनावे। परमपिता परमात्मा की बायोग्राफी बतावें। मनुष्य मात्र तो बिल्कुल जानते है। मुख्य अक्षर है यह। आओ बहनों और भाइयों आकर रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान पढ़ाई पढ़ो। जिससे तुम यह बनेंगे। यह ज्ञान पाने से और सृष्टि चक्र को समझने से तुम ऐसे चक्रवर्ती सत के महाराजा और महारानी बन सकते हो। यह ल०ना० भी इस पढ़ाई से बने हैं। तुम भी पढ़ाई से बन हो। इस पुरुषोत्तम संगम युग का बहुत प्रभाव है। बाप आते भी हैं भारत में। दूसरे कोई खण्ड में क्यों आ बाप है अविनाशी सर्जन। तो जरूर आवेंगे भी वहां ही जो फ्रूटफुल जो भूमि सदैव कायम रहती है। जिस धरती पर भगवान का पांव लगा वह धरती का विनाश हो नहीं सकता। यह भारत तो रहना ही है ना। देवता लिस सिर्फ यह बदली होता है। बाकी भारत जो है सच्च खण्ड। झूठ खण्ड भी है भारत ही बनता है। भारत ही आलराउन्ड पार्ट है। और कोई खण्ड को ऐसे नहीं कहेंगे। सच्चा और झूठा भगवान ही आकर सच्च खण्ड हैं। फिर झूठ खण्ड रावण बनाती है। फिर सच्च की रूती नहीं रहती। इसलिए गुरु भी सच्चे नहीं मिलते। अभी समझते हो गुरु जिनके अंधेले ..... वह भी पूरे अंधेले हैं। वह सन्यासी तो, फालोअर्स गृहस्थी। उनको फालो कैसे कहेंगे। अभी तो बाप खुद कहते हैं बच्चे पावत्र बनो और दैवी गुण धारण करो। तुमको अभी देवता हैं। सन्यासी कोई सम्पूर्ण निर्विकारी थोड़े ही हैं। थड़ी2 विकारियों पास जाकर जन्म लेते हैं। कई बालब्रह्मचारी होते हैं। ऐसे तो बहुत ही हैं। विलायत में भी बहुत हैं। बूढ़े होते हैं तो शादी करते हैं सम्भाल के लिए उनके लिए धन छोड़कर भी जाते हैं। बाकी धन धर्माऊ कर देते हैं। यहां तो उनका बच्चों में बहुम मन है। जांच रखते हैं हमारे बच्चे ठीक पिछाड़ी में ठीक चलाते हैं या नहीं। परन्तु आजकल के बच्चे तो हैं बाप वानप्रस्त में गया तो अच्छा हुआ। चाभी तो मिल गई। जीते जी सारा खाना ही खराब कर देते हैं फिर बाप को भी कहने लगते हैं यहां से निकल जाओ। तो बाप समझाते है प्रदर्शनी में तुम यों कहना कि बहनों और भाईयों आकर रचयिता के और रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान सुनो। इस सृष्टि चक्र को जानने से तुम चक्रवर्ती दैवी-देवता विश्व के महाराजा महारानी बन जावेंगे। यह बाबा बच्चों को कहते हैं। तो सद्गुरु एक ही हैं बाकी सभी अंधेले गुरु। सतयुग त्रेता में तो गुरु की दरकार ही नहीं रहती जन्मों के लिए तुमको सद्गति मिल जाती है। फिर आधा कल्प के बाद गुरु मिलते हैं। अंधेले फालोअर्स हो जाती। तुम्हारी सत्यानाश हुई है ना। यह बाबा भी कहते हैं हमने ×24× 12 गुरु किये। सत्यानाश हो तमोप्रधान बन पड़े। अब बाप कहते हैं यह है बहुत जन्मों के अन्त का जन्म। मैं इन में ही प्रवेश ब्रह्मा के सामने है विष्णु। विष्णु को 4 भुजायें क्यों देते हैं। वह है दो मेले की दो पिमेल की। यहां वाला कोई मनुष्य थोड़े ही होता है। यह समझाने लिए है। विष्णु अर्थात ल०ना०। दो भुजा उनकी और और ब्रह्मा को भी दिखाते हैं दो भुजा ब्रह्मा की और दो भुजा सरस्वती की। दोनो ही वेहद के गये। ऐसे नहीं कि सन्यास कर कोई दूसरे जगह चले जाते हैं जाना है। नहीं। बाप कहते हैं गृहस्थ रहते नर्क को बुद्धि से त्याग कर दो। नर्क को भूल स्वर्ग को याद करना है। नर्क को पुरानी दुनिया

दुनिया कहा जाता है। नर्क और नर्कवासियों से बुधियोग हटा हटाकर स्वर्गवासी देवताओं से बुधियोग लगाना है। जो पढ़ते हैं तो बुधि मेरहता है ना हमें पास करेंगे फिर यह बनेंगे। गुरु लोग क्या बनाते हैं। हमारी और भारत की और ही सत्यानाश कर दी है। आगे गुरु करते थे जब कि वानप्रस्त अवस्था होती थी। बाप कहते हैं मैं उनकी वानप्रस्त अवस्था में ही प्रवेश करता हूं। जो बहुत जन्मों के अन्त के जन्म में है। 84 जन्मों का चक्र लगाते सत्या ही नाश हो गई है। अंधे ऐसे बन पड़े हैं जो कुछ भी समझते थोड़े ही हैं। कहने लग पड़ते हैं यह अपने को भगवान कहते हैं, फलाना कहते हैं। अरे इनमें तो साफ लिखा हुआ है भगवानुवाचः मैं बहुत जन्मों के अन्त वाले जन्म में ही प्रवेश करता हूं। जिसने शुरु से लेकर अन्त तक पार्ट बजाया है। इसमें ही प्रवेश करता हूं। क्योंकि इनको ही फिर पहले नम्बर में जाना है। ब्रह्मा सो विष्णु। विष्णु सो ब्रह्मा। दोनों को 4 भुजायें देते हैं। हिसाब भी है ब्रह्मा सरस्वती सो ल०ना० फिर ल०ना० सो ब्रह्मा सरस्वती बनते हैं। तुम झट यह हिसाब बतलाते हो। विष्णु अर्थात ल०ना० 84 जन्म लेते2 फिर आकर साधारण यह ब्रह्मा सरस्वती बनते हैं। इनका नाम भी बाद में बाबा ने ब्रह्मा रखा है। नहीं तो ब्रह्मा का बाप कौन? जरूर कहेंगे शिव बाबा। कैसे रचा? स्पष्ट किया। बाप कहते हैं मैं इन में प्रवेश करता हूं। तो सिध हुआ ना। लिखना चाहिए शिव भगवानुवाचः। मैं ब्रह्मा में प्रवेश करता हूं जो अपने जन्मों को नहीं जानते हैं। बहुत जन्मों के अन्त के भी अन्त में मैं प्रवेश करता हूं। वह भी जब वानप्रस्त अवस्था होती है तब आता हूं। और जब दुनिया पतित पुरानी हो जाती है तब ही आता हूं। कितना सहज बतलाते हैं। गायन भी है धृतराष्ट्र के औलाद अंधे ... भारत की कितनी सत्यानाश हो गई है। सत्यानाश किसने की? गुरुओं ने। आगे 60 वर्ष से गुरु गुरु करते थे। अभी तो जन्म से ही गुरु कर देते हैं। यह सीखे हैं क्रिश्चनस से। और छोटेपन में गुरु कराने की दरकार ही क्या। समझते हैं छोटेपन में ही मरेंगे तो सदगति को पा लेंगे। बाप समझाते हैं यहां तो कोई भी सदगति हो न सके। तुम्हारे गुरु लोग अंधे थे। तो सत्यानाश हो पड़े। अभी बाप तुमको कितना ऊंच बनाते हैं। भक्ति में तुम सीढ़ी उतरते ही आये हो। रावण राज्य है ना। विषय दुनिया शुरु हो जाती है। गुरु तो सभी ने किया। यह खुद भी कहते हैं हमने गुरु बहुत किया। ऐसी2 बातें सुनाईजां गालियां ही गालियां हैं। भगवान जो सभी की सदगति करते हैं उनको गालियां ही गालियां। भगवान जो सभी की सदगति करते हैं उनको ही गाली देते रहते हैं। ईश्वर सर्वव्यापी है। कुत्ते-बिल्ली उल्लू बंदर सभी में हैं। इससे भी पेट नहीं भरा तो फिर ईडियट कहने की गाली देनेलगे। ठिक्कर-भित्तर में परमात्मा है। बाप कहते हैं ऐसे जो बन जाते हैं तो चेलों की भी सत्यानाश तो गुरुओं की सत्यानाश हो जाती है। हिरण्यकश्यप बन जाते हैं कि हम ही ईश्वर के रूप हैं। माताएं उनकी पैर धोकर पीती हैं। इतना सुनते हैं तो भी गुरुओं की पीछ नहीं छोड़ते। बहुत जंजीरें जुंजीरें पड़ी हुई हैं। जंजीरें जो बहुत मोटी होती है तो कोई पतली होती है। कोई भारी चीज़ उठाते हैं तो कितनी मोटी जंजीर उठाते हैं। इन में भी ऐसे है। कोई तो आकर तुम्हारा सुनेंगे। अच्छी रीत पढ़ेंगे। कोई समझते ही नहीं। नम्बरवार माला की दाना बनती है। मनुष्य सृष्टि भार्ग में माला सिमरते हैं। ज्ञान पाई का भी नहीं। गुरु ने कहा माला फेरते रहो। बस राम राम की धून लगा देते हैं। जैसे कि बाजा बजता है। आवाज़ बड़ा ही मीठा लगता है। बस। बाकी जानते कुछ भी नहीं। राम किसको कहा जाता कब आते हैं कुछ भी नहीं जानते। कृष्ण को भी द्वापर में ले गये हैं। यह किसने लिखाया? गुरु ने। कृष्ण ने द्वापर में गीता सुनाई फिर उससे क्या हुआ? द्वापर के बाद तो कलियुग आया। तमोप्रधान बने। बाप कहते हैं मैं संगम पर ही आकर तुमको तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाता हूं। तुम तो कितने अन्धश्रद्धा बन पड़े हो। भक्ति से दुर्गतिको पा लिया है। बाप समझाते हैं जो कांटे से फूल बनने वाले होंगे वह झट समझ जावेंगे। कहेंगे यह तो बिल्कुल सत्य बात है। कोई2 लोग अच्छी रीत समझते हैं तो समझते हैं तुम बहुत अच्छे समझाते हो। 84 जन्मों की कहानी भी बरोबर है। ज्ञान का सागर तो एक ...

हीहै। वह एक ही बार आते हैं पतित दुनिया को पावन बनाने। ऐसे बाप को फिर कितनी गाली देते हैं। कच्छ अवतार, मच्छ अवतार परशुराम अवतार। परशुराम ने कुल्हाड़ा उठाया। सभी भी रा यह किया। असत्य बा को सत्य2 करते2असत्य ही बन जाते हैं। अभी तुम बच्चे समझते हो वह है भक्ति मार्ग। यह है ज्ञान मा ज्ञान सुनाने वाला तो एक ही ज्ञान सागर है। उनकी महिमा गाई जाती है। देवताओं अथवा मनुष्यों वह महिमा हो न सके। वह है ही मनुष्य सृष्टि का बीज रूप। चैतन्य है ना। सत्य है चैतन्य है। कृष्णकि तो महिमा करते हो ना। शान्ति का सागर है सुख का सागर× सागर है.... सभी का वह सागर है। वह आकर तुम बच्चों को सभी कुछ बताते हैं× कि मैं कौन हूं। दिल से लगे ब तब जब कि कुछ मिले अभी तुमको दिल से लगता है। गुरु को कब बाबा वा टीचर नहीं कहा जाता। तुम्हारे पास बहुत बुद्धि आते हैं जो कुछ भी समझते नहीं। समझाया भी जाता है कि वह बेहद का बाप भी है-टीचर भी रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देते हैं। सच्चा सद्गुरु भी है। जो सभी को ले जाते हैं× शा सुखधाम। शिव बाबा आते ही हैं रात्रि में। गाया भी जाता है ब्राह्मणों का दिन सो ब्रह्मा का दिन। की रात सो ब्रह्मा की रात। अभी है रात। भक्ति मार्ग का अन्त है। रात में धक्के बहुत खानी पड़ती है भगवान को ढूंढने लिए पहाड़ों पर तीर्थों पर× इधर-उधर कितना भटकते हैं। वहां क्या रखा हुआ है। भी नहीं। महिमा बहुत कर देते हैं। जैसे स्वामी राम तीर्थ के लिए कहते हैं वह जंगल में जाते थे। उन में ताकत थी। ब्रह्म में लीन होने लिए माथा मारते हैं। बाप समझाते हैं ब्रह्म में लीन होने की तो बात उनको यह पता नहीं है कि जो भी एक्टर्स हैं यह सभी का पार्ट अविनाशी है। ड्रामा के अविनाशी एक आत्मा में ही सारा 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। कितने वन्डरफुल बातें हैं। कुदरत है ना। इतनी आत्मा में अविनाशी पार्ट भरा हुआ है तो× जो कभी मिट नहीं सकता। यह बातें बाप ही सुनाते हैं। अविनाशी चर्क फिरता ही रहता है। कोई नई आत्मा नहीं बनती है। आत्मा में पार्ट भरा हुआ है। जो ही रहते हैं। 84 जन्मों के बाद फिर यह ल०ना० बनते हैं। तुम यहां आये ही हो फिर से ल०ना० हिस्ट्री-जागराफी फिर रिपीट होगी। क्राईस्ट बोध आद सभी अपने2 समय पर आ जावेंगे। यह है बेहद जो बाप ही समझाते हैं। पहले2 है ल०ना० की फर्स्ट। प्रजा भी थोड़ी ही होती है। फिर वृद्धि को गाते भी हैं ना फकीरा नू साहब.... तुम सभी फकीर हो ना। तुम्हारे पास कुछ भी है नहीं। ही खाली हो। तुम फकीर ठहरे। उन× फकीरों पास तो 5हजार 10 हजार निकल आते हैं। ज जांच करती है। तुम पूरे फकीर फिर पूरे अमीर बनते हो। जो पूरे फकीर नहीं बनते हैं पूरे अमीर भी न अभी तुम अ फकीर हो ना। बाप कहते हैं हम तुम्हारी मिलकीयत को क्या करेंगे। तुमको ही ट्रस्टी क कहते भी हैं यह सभी कुछ ईश्वर ने दिया। अच्छा उसने दिया था फिर उसने ही ले लिया तो फिर या क्यों मचाते हो। अच्छा।

आज गुरुवार है। बृहस्पत बृहस्पति की दशा हो जाती है। बृहस्पती की दशा है ऊंच तेऊंच भी अभी बहुत ऊंच ते ऊंच दशा है। स्वर्ग में तो जरूर आवेंगे। जो थोड़ा भी ज्ञान सुनते हैं तो स्वर्ग आवेंगे। बच्चों को रेस करनी चाहिए। आप समान बनाते जाओ। सर्विस करते जाओ। जो सर्विस एबुल उन से रेस करो। मंदिरों में जाकर सर्विस करो। तुम पैगम्बर हो ना। क्राईस्ट बुध आद पैगम्बर थोड़े भी बाप का पैगाम नहीं लाते। बाप ही आकर पैगाम देते हैं। जो तुम सभी को देते हो। बोलो बाप तुम आत्मा हो। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने के लिए तुम मुझे याद करो तो पाप भस्म हो जावेंगे। फिरते गंगा स्नान करने से और ही पाप चढ़ते हैं। वह तो गन्दा पानी है। जिनमें गना किचड़ा रहता है। उनको फिर कहते हैं× हो पतित पावनी है। इतने अंधे बन गये हो। अच्छा